

जितिया व्रत कथा

किसी वन में एक चील और एक सियारिन रहती थीं। दोनों में गहरी दोस्ती थी। एक बार कुछ महिलाएं जंगल में आईं, जो जीवित्पुत्रिका व्रत के बारे में बात कर रही थीं। उनकी बातें सुनकर चील के मन में भी इस व्रत को करने की इच्छा हुई। चील ने अपनी मित्र सियारिन को भी इस व्रत के बारे में बताया, जिसके बाद दोनों ने विधि-विधान से जितिया का व्रत और पूजन किया। लेकिन पूजा के बाद ही चील और सियारिन को बहुत तेज भूख लगने लगी। चील ने तो भूख बर्दाश्त करने की कोशिश की, लेकिन सियारिन ऐसा नहीं कर पाई और वह जंगल में शिकार करने चली गई। जब चील ने सियारिन को मांस खाते देखा, तो उसने उसे बहुत डाँटा। इस प्रकार सियारिन का व्रत टूट गया, लेकिन चील ने इस व्रत को पूरी निष्ठा से पूर्ण किया।

अगले जन्म में सियारिन और चील का जन्म बहनों के रूप में हुआ। सियारिन का विवाह एक राजकुमार से हुआ और चील का विवाह राज्य के मंत्री के पुत्र से हुआ। कुछ समय बीतने पर सियारिन ने एक पुत्र को जन्म दिया, लेकिन जन्म के कुछ ही दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई। इसके बाद चील ने भी एक पुत्र को जन्म दिया और उसका पुत्र पूरी तरह स्वस्थ रहा। यह देखकर सियारिन को चील से ईर्ष्या होने लगी। जलन के कारण सियारिन ने अपनी बहन के पुत्र और पति को मरवाने की योजना बनाई, परंतु दोनों ही बच गए। एक दिन देवी मां सियारिन के सपने में आईं और उन्होंने उससे कहा - "यह तुम्हारे पूर्व जन्म के कर्मों का फल है, जिस कारण तुम्हारी कोई संतान जीवित नहीं रहती। यदि तुम अपनी स्थिति सुधारना चाहती हो, तो सच्चे मन से जितिया का व्रत रखो।"

सियारिन ने इस सपने के बारे में अपने पति को बताया और उनके कहने पर उसने अपनी बहन चील से क्षमा मांगी। सियारिन को अपनी गलतियों पर पछताता देखकर चील ने उसे माफ कर दिया। जब पुनः जितिया का व्रत आया, तो सियारिन और उसकी बहन चील दोनों ने एक साथ यह व्रत रखा। माता जितिया की कृपा से सियारिन को एक सुंदर व स्वस्थ पुत्र की प्राप्ति हुई। इसके बाद दोनों बहनें खुशी-खुशी रहने लगीं।